

प्रपत्र-33

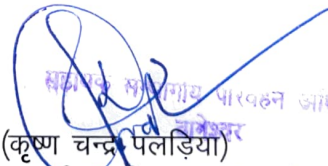
परियोजना का नाम :-

-: जनपद बागेश्वर में नगरपालिका बागेश्वर के अन्तर्गत चण्डिका वार्ड के गाडगॉव में परिवहन विभाग हेतु :-

1. अन-आवासीय कार्यालय भवन, 2. ऑटोमेटेड ड्राईविंग टैस्टिंग ट्रैक तथा 3 ट्रैफिक अवेयरनेस सैन्टर का निर्माण

भू-वैज्ञानिक की आख्या

भू-वैज्ञानिक की आख्या सलंगन है।


सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी
(कृष्ण चन्द्र पलड़िया)

सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी
प्रयोक्ता एजेन्सी

कार्यालय उपनिदेशक/भूवैज्ञानिक
भूत्व एवं खनिकर्म इकाई, उद्योग निदेशालय उत्तराखण्ड,
जनपद बागेश्वर।

संख्या 229 /बागे0/भूविज्ञान/भवन/2022-23

दिनांक: 13.06.2022

सेवा में,

सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी,
बागेश्वर।

विषय— परिवहन विभाग बागेश्वर निर्माण परियोजना स्थल हेतु भूगर्भीय आख्या।

महोदय,

कृपया उपरोक्त विषयक आपके कार्यालय के पत्रांक 414/भूमि चयन/2022-23, दिनांक 17-05-2022 का सन्दर्भ ग्रहण करने का कष्ट करें। उपरोक्त प्रकरण में आवश्यक अभिलेख पूर्ण कराये जाने के उपरान्त, प्रस्तावित स्थल भूगर्भीय आख्या निरीक्षण अधोहस्ताक्षरी द्वारा दिनांक 07.06.2022 को प्रयोक्ता एजेन्सी/याचक विभाग के प्रतिनिधि श्री कृष्ण चन्द्र पलड़िया, सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी की उपस्थिति में सम्पन्न किया गया जिसकी निरीक्षण आख्या निम्नवत् है:-

स्थिति:-

जनपद बागेश्वर में नगरपालिका बागेश्वर के अन्तर्गत चण्डिका वार्ड के गाडगाँव में परिवहन विभाग हेतु अनआवासीय कार्यालय भवन, ऑटोमेटेड ड्राईविंग टैस्टिंग ट्रैक तथा ट्रैफिक अवेयरनेस सैन्टर का निर्माण कार्य प्रस्तावित है। प्रस्तावित स्थल वर्तमान में एक पहाड़ी ढालदार भूभाग के अन्तर्गत अवस्थित है जिसमें स्वस्थानिक प्रजाति की झाड़ियां तथा विभिन्न प्रजाति के वृक्ष विद्यमान हैं। निरीक्षण के समय स्थल पर उपस्थित प्रयोक्ता एजेन्सी/याचक विभाग के प्रतिनिधि द्वारा अवगत कराया गया कि स्थल पर वन पंचायत में 13 चीड़ के वृक्ष तथा तथा सिविल/राज्य सरकार की भूमि में 06 चीड़ के वृक्ष तथा 02 आम के वृक्ष, इस प्रकार कुल 21 वृक्ष विद्यमान हैं। प्रस्तावित स्थल, नगर पालिका परिषद बागेश्वर के चण्डिका वार्ड में बागेश्वर-काण्डा मोटर मार्ग पर मार्ग से दक्षिण पश्चिम की ओर लगभग 800 मीटर की दूरी पर स्थित है। स्थल एक छोटे पर्वत शिखर पर स्थित है जिसके उत्तर-पूर्व तथा दक्षिण-पश्चिम की ओर स्थित भूभाग स्थल से, कम ऊंचाई प्रदर्शित करता है। स्थल के उत्तर-पूर्व की ओर सम्पर्क मार्ग तथा उसके बाद आबादी क्षेत्र है। स्थल के दक्षिण-पूर्व की ओर, खुला पहाड़ी ढालदार भूभाग अवस्थित है। स्थल के दक्षिण-पश्चिम की ओर वन विभाग की भूमि स्थित है। स्थल के उत्तर-पूर्व की ओर एक सम्पर्क मार्ग स्थित है जो बागेश्वर-काण्डा मुख्य मार्ग को जोड़ता है। प्रस्ताव के साथ उपलब्ध कराये गए अभिलेखों तथा आवेदक विभाग के प्रतिनिधि द्वारा सूचना के अनुसार प्रस्तावित स्थल 0.74 है० भूमि पर स्थित है जिसमें 0.32 है० भूमि वन पंचायत गाडगाँव (पूर्व वन पंचायत) तथा 0.42 है० भूमि सिविल सोयम प्रकार की है।

आवेदित स्थल भारतीय सर्वेक्षण विभाग की टोपाशीट संख्या 53 O/13 के अन्तर्गत स्थित है। प्रस्तावित स्थल समुद्र तल से लगभग 1015 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। प्रस्तावित स्थल बहुभूजाकार रूप का है जिसकी परिधि/किनारे निम्न अक्षांस एवं देशान्तर पर स्थित हैं:-



— ✖ —

1/4

	Longitude	Latitude		Longitude	Latitude
1	79° 47' 9.81" E	29° 50' 7.18" N	11	79° 47' 12.06" E	29° 50' 4.51" N
2	79° 47' 10.05" E	29° 50' 7.67" N	12	79° 47' 11.81" E	29° 50' 4.01" N
3	79° 47' 10.84" E	29° 50' 7.85" N	13	79° 47' 10.19" E	29° 50' 4.65" N
4	79° 47' 11.99" E	29° 50' 6.62" N	14	79° 47' 10.29" E	29° 50' 5.17" N
5	79° 47' 12.86" E	29° 50' 5.72" N	15	79° 47' 9.8" E	29° 50' 5.35" N
6	79° 47' 14.58" E	29° 50' 4.64" N	16	79° 47' 9.77" E	29° 50' 6.14" N
7	79° 47' 15.09" E	29° 50' 4.15" N	17	79° 47' 10.02" E	29° 50' 6.86" N
8	79° 47' 14.64" E	29° 50' 3.79" N	18	79° 47' 10.76" E	29° 50' 6.22" N
9	79° 47' 12.77" E	29° 50' 4.68" N	19	79° 47' 11.66" E	29° 50' 6.15" N
10	79° 47' 12.6" E	29° 50' 4.49" N	20	79° 47' 10.65" E	29° 50' 6.68" N



सैटेलाइट इमेज में स्थल की स्थिति

भूगर्भीय संरचना:-

भूगर्भीय संरचना के दृष्टिकोण से प्रस्तावित स्थल लघु हिमालय के विकसित सोपानो के मध्य जौनसार समूह की नागथाट-बेरीनाग फोरमेशन के अन्तर्गत अवस्थित है। पूर्व में किये गये अध्ययनों के अनुसार सम्पूर्ण बागेश्वर जनपद (प्रस्तावित स्थल) भूगर्भीय दृष्टिकोण से भारतीय साइस्मिक मानचित्र पर उच्च हिमालयी पर्वत श्रेणियों के मध्य अवस्थित अत्यंत संवेदनशील सक्रिय भूकम्पीय जोन-V में अवस्थित हैं, जहां प्रस्तावित स्थलो के समीपवर्ती भागो से बेरीनाग एवं अन्य थ्रस्ट लाइनों के गुजरने के साथ- साथ, स्थल के उत्तरी एवं दक्षिणी दिशाओ में अन्य थ्रस्ट उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूरब एवं अन्य दिशाओ में विस्तारित है, जो किसी भी आन्तरिक भूगर्भीय सक्रियता के कारण सक्रिय हो सकते हैं। प्रस्तावित स्थल की सतह पर हल्के भूरे रंग की क्ले मिश्रित मृदा

[Handwritten signature]

का मोटा आवरण है। स्थल को पूर्व में ही छोटे छोटे स्तरों में विकसित किया गया है। स्थल पर सामान्य ढलानें 15° से 20° तक हैं जिनकी दिशा उत्तर-पूर्व की ओर है। स्थल पर ऊपर की ओर स्थित भूभाग, स्थल के दक्षिण-पूर्व की ओर स्थित, स्थल से अधिक ऊंचाई वाले पहाड़ी ढालदार भूभाग के अपरदन से कालान्तर में टूटकर आये अवसादों के स्थल पर निक्षेपित हुए भाग से निर्मित है जो वर्तमान में कठोर हो गया है। स्थल के उत्तर-पश्चिम की ओर लगभग 01 किमी० की दूरी पर सरयू नदी प्रवाहित होती है जिसका समरेखण तथा बहाव की दिशा उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम की ओर है। प्रस्तावित स्थल, सरयू नदी के आवाह क्षेत्र के अन्तर्गत आता है। स्थल पर स्थित ढलानों को, धारक दीवारों का निर्माण कर, स्तरों में विकसित किया जाना प्रस्तावित है। स्थल पर एवं स्थल के निकटवर्ती क्षेत्र में कोई अधिक ढालदार भूभाग तथा कोई प्राकृतिक नाला आदि दृष्टिगोचर नहीं होता है जिससे स्थल को कोई खतरा उत्पन्न हो। प्रस्तावित स्थल/क्षेत्र भारतीय सीजमिक मानचित्र में सक्रिय भूकम्पीय पट्टी IV (हाई डैमेज रिस्क जोन) में वर्गीकृत किया गया है जहाँ स्थल अधिकांशतः लघु से मध्यम व यदाकदा वृहद तीव्रता के भूकम्पनों से प्रभावित हो सकता है। निरीक्षण के समय स्थल पर भूधंसाव के कोई चिन्ह नहीं पाये गये। स्थल वर्तमान में स्थिर (प्राकृतिक आपदा को छोड़कर) प्रतीत होता है।



स्थल का चित्र

सुझाव एवं शर्तें:-

प्रथम दृष्टया निरीक्षण के दौरान वर्तमान में ऐसा कोई तथ्य प्रकाश में नहीं आया जिससे कि भवन निर्माण से भूखण्ड को कोई खतरा उत्पन्न हो, तथापि भूगर्भीय संरचना के दृष्टिकोण से भवन का निर्माण करते समय निम्नलिखित सुझावों का अनुपालन किया जाना अनिवार्य होगा:-

1. स्थल पर निर्माण कार्य स्थल की भारग्रही क्षमता के अनुरूप ही किया जाना होगा।

Handwritten signature

2. स्थल के निकटवर्ती क्षेत्र में स्थित उर्ध्वाधर खुले भूभागों तथा स्थल को विकसित करते समय निर्मित होने वाले उर्ध्वाधर खुले भूभागों में भवन निर्माण कार्य से पूर्व, सुरक्षात्मक उपाय किये जाने होंगे।
3. भवन का निर्माण बीम व कालम पर ही किया जाये तथा नींव को यथोचित गहराई तक ले जाया जाना तथा भवन का निर्माण भूकम्प के अधिकतम परिमाणों के कम्पनो को दृष्टिगत रखते हुए भूकम्परोधी तकनीक को अपनाते हुए किया जाना आवश्यक होगा।
4. भवन की अधिकतम ऊँचाई क्षेत्र में निर्धारित किये गये मानको के अनुसार ही रखनी होगी तथा भवन की ऊपरी छत को ढालदार ही बनाया जाना होगा।
5. भवन का निर्माण यथासम्भव हल्की निर्माण सामग्री का उपयोग करते हुए किया जाये तथा सी0सी0 ब्लाको का उपयोग भवनों के निर्माण में पूर्णतया प्रतिबन्धित होगा।
6. स्थल के निकटवर्ती क्षेत्र में स्थित वृक्षों से नियमानुसार पर्याप्त दूरी पर ही निर्माण कार्य किया जाना होगा।
7. सोक पिट का निर्माण भवन से दूर ऐसे स्थल पर करें जहाँ पर रिसाव की स्थिति ना हो तथा इस प्रकार से निर्माण किया जाये कि जब भी सीवर लाईन उपलब्ध हो उसमें मिलान किया जा सके।
8. भवनों के चारों ओर वर्षा जल एवं प्रयुक्त जल के निकास हेतु सक्षम जल प्रवाह तन्त्र विकसित किया जाना भूगर्भीय संरचना के दृष्टिकोण से अनिवार्य होगा क्योंकि जल भराव व रिसाव के कारण स्थल पर भूधंसाव की सम्भावना से इंकार नहीं किया जा सकता है।

निष्कर्ष:-

अतः उपरोक्त सुझावों के पूर्णतया अनुपालन की दशा में ही उपरोक्त स्थल भूगर्भीय संरचना के दृष्टिकोण से सन्दर्भित प्रयोजन हेतु उपयुक्त प्रतीत होता है। उचित होगा कि यह सुनिश्चित किया जाये कि प्रस्तावित स्थल पर प्रस्तावित संरचनाओं के निर्माण करते समय उपरोक्त सुझावों एवं शर्तों का पूर्णतया अनुपालन किया जाये।

भवदीय



(लेख राज)

उपनिदेशक / भूवैज्ञानिक